vinetur

# इटली ने कानून को मंज़ूरी दी: Gran Selezione का इस्तेमाल 2026 से पहले की अपीलेशनों तक सीमित

इस बदलाव से Chianti Classico की शीर्ष श्रेणी सुरक्षित होगी और व्यापक Chianti अपीलेशन को बाद में इसी लेबल शब्द का इस्तेमाल करने से रोका जाएगा

शुक्रवार, 13 नवंबर 2026



इटली ने अपने वाइन कानून में ऐसे बदलाव को मंज़ूरी दी है, जिसके तहत Gran Selezione शब्द उन अपीलेशनों के लिए आरक्षित होगा जिन्होंने 1 जनवरी 2026 से पहले ही अपने उत्पादन नियमों में इस पदनाम को शामिल कर लिया था। इससे Chianti Classico की शीर्ष श्रेणी सुरक्षित होगी और व्यापक Chianti अपीलेशन के साथ लंबे समय से जारी विवाद का अंत होगा।

इटली की सीनेट ने 4 नवंबर को ColtivaItalia विधेयक को अंतिम मंज़ूरी दी। इस विधेयक में इटली के 2016 के समेकित वाइन कानून, जिसे कानून 238/2016 के नाम से जाना जाता है, के अनुच्छेद 31 में बदलाव शामिल है। नए प्रावधान के अनुसार, Gran Selezione का इस्तेमाल केवल उन संरक्षित अपीलेशनों की वाइन के लिए किया जा सकेगा, जिनकी नियम-पुस्तिका में 2026 की शुरुआत से पहले इस शब्द की अनुमति थी और उसका नियमन किया गया था—बशर्ते वे इस

पदनाम से जुड़ी कानूनी शर्तें पूरी करती हों।

Chianti Classico के लिए यह बदलाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि 2014 से Gran Selezione इस अपीलेशन की सर्वोच्च श्रेणी रही है। संशोधन अन्य अपीलेशनों को बाद में इसी शब्द को अपनाने से रोकता है और उस श्रेणी पर Chianti Classico के दावे को मज़बूत करता है, जिसे वहां के उत्पादक एक दशक से अधिक समय से प्रीमियम बाज़ार में स्थापित करने में जुटे हैं। इस उपाय की खबर दिए जाने के समय विधेयक की संसदीय प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी, लेकिन इटली के आधिकारिक राजपत्र में इसके प्रकाशन और लागू होने की तारीख की पुष्टि नहीं हुई थी।

तुस्कनी में यह मुद्दा वर्षों से विवादास्पद रहा है। नवंबर 2019 में Chianti DOCG कंसोर्टियम ने अपने नियमों में Gran Selezione को शामिल करने के लिए बदलाव की प्रक्रिया शुरू की। Chianti Classico कंसोर्टियम ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि यह शब्द उसकी वाइन को अलग पहचान देने और उनका मूल्य बढ़ाने की रणनीति का अहम हिस्सा बन चुका है। Chianti DOCG के लिए मांगे गए बदलाव को मंत्रालय की मंज़ूरी नहीं मिली, लेकिन व्यापक कानूनी प्रश्न अनसुलझा रहा। विवाद जारी रहने के दौरान 2022 में तुस्कनी की क्षेत्रीय सरकार ने Chianti के लिए Gran Selezione शुरू करने पर कोई रुख नहीं अपनाने का फैसला किया।

नया कानून इस प्रश्न का समाधान पहले से स्थापित इस्तेमाल के पक्ष में करता दिखता है। पात्रता को उन अपीलेशनों से जोड़कर, जिनके नियमों में 1 जनवरी 2026 से पहले ही इस शब्द का नियमन था, कानून निर्माताओं ने इसके व्यापक विस्तार की अनुमति देने के बजाय पहले से लागू व्यवस्था को सुरक्षित रखने का तरीका अपनाया है। इसी प्रावधान के तहत Supremo शब्द को इतालवी वाइन नियमों में एक अलग पारंपरिक उल्लेख के रूप में भी शामिल किया गया है। हालांकि, कानून लागू होने के बाद अलग-अलग अपीलेशनों में इस पदनाम का इस्तेमाल कैसे किया जा सकेगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है।

इस विवाद पर इसलिए भी ध्यान गया है क्योंकि उपभोक्ता अक्सर Chianti और Chianti Classico को एक ही समझ लेते हैं, जबकि ये अलग-अलग क्षेत्र, नियम और उत्पादक समूहों वाले पृथक DOCG अपीलेशन हैं। Chianti Classico, Florence और Siena के बीच स्थित ऐतिहासिक क्षेत्र से आता है और इसकी पहचान कंसोर्टियम के काले मुर्गे के प्रतीक से होती है। Chianti DOCG तुस्कनी के एक बड़े क्षेत्र में फैला है और इसमें कई उपक्षेत्र शामिल हैं। दोनों में sangiovese प्रमुख अंगूर है, लेकिन इनके उत्पादन नियम अलग हैं और बाज़ार रणनीतियां भी अलग-अलग विकसित हुई हैं।

लेबल पर यह अंतर मायने रखता है। अलग-अलग अपीलेशनों में एक ही शीर्ष श्रेणी के शब्द का इस्तेमाल होने से खरीदारों, खासकर इटली के बाहर के उपभोक्ताओं के लिए दोनों श्रेणियों का फर्क समझना कठिन हो सकता था। Gran Selezione को उन अपीलेशनों तक सीमित रखकर जिन्होंने पहले ही इसे स्थापित किया था, कानून भ्रम कम कर सकता है और उच्च-मूल्य वाले लेबल शब्द तथा विशिष्ट वाइन पहचान के बीच संबंध को मज़बूत कर सकता है। पेय उद्योग के व्यापक संदर्भ में, इससे लेबलिंग मानकों में स्पष्टता आ सकती है और तुस्कनी की उस प्रीमियम वाइन श्रेणी की अंतरराष्ट्रीय बाज़ार स्थिति सुरक्षित रह सकती है, जो मूल स्थान और ब्रांड पहचान पर काफी निर्भर करती है।

2014 में Gran Selezione को Chianti Classico की गुणवत्ता-श्रेणी व्यवस्था में annata और riserva से ऊपर के स्तर के रूप में जोड़ा गया था। इस श्रेणी के लिए वाइन को Chianti Classico की अन्य श्रेणियों की तुलना में अधिक कड़ी शर्तें पूरी करनी होती हैं। नियमों के मुताबिक, वाइन में कम से कम 90% sangiovese होना चाहिए, अंगूर केवल उत्पादक के अपने दाखबागों से लिए जाने चाहिए और कम से कम 30 महीने तक परिपक्व किया जाना चाहिए, जिसमें कम से कम तीन महीने बोतल में बिताए गए हों। उत्पादक लेबल पर अपीलेशन के भीतर किसी अधिक विशिष्ट मूल-क्षेत्र की पहचान के लिए अतिरिक्त भौगोलिक इकाइयों—जिन्हें इतालवी में Unità Geografiche Aggiuntive कहा जाता है—का उल्लेख भी कर सकते हैं।

समय के साथ यह श्रेणी Chianti Classico के उत्पादकों के लिए एक अहम व्यावसायिक साधन बन गई है। Chianti Classico Wine Consortium के हवाले से दिए गए आंकड़ों के अनुसार, 2014 में इस श्रेणी की शुरुआत के समय 33

वाइनरी ने अपनी वाइन को Gran Selezione के रूप में प्रमाणित कराया था। कंसोर्टियम का कहना है कि अब 197 वाइनरी कम से कम एक Gran Selezione प्रमाणन हासिल कर चुकी हैं, जिनमें कुल 256 लेबल शामिल हैं। फिर भी, इस श्रेणी का हिस्सा Chianti Classico के कुल उत्पादन का केवल लगभग 5% है। इस तरह, अपीलेशन के कुल उत्पादन में इसकी हिस्सेदारी कम है, लेकिन इसका प्रभाव अहम है।

ये आंकड़े बताते हैं कि कानूनी संरक्षण क्यों महत्वपूर्ण है। उत्पादन में सीमित हिस्सेदारी वाला पदनाम भी निर्यात बाज़ारों, रेस्तरां की वाइन सूचियों और विशेषज्ञ खुदरा दुकानों में अनुपात से अधिक महत्व रख सकता है। प्रीमियम श्रेणियों का इस्तेमाल अक्सर गुणवत्ता का संकेत देने, ऊंची कीमतों को उचित ठहराने और किसी क्षेत्र की वाइन को निकटवर्ती प्रतिस्पर्धियों से अलग दिखाने के लिए किया जाता है। Chianti Classico के उत्पादकों का तर्क रहा है कि Gran Selezione केवल परिपक्वता की एक श्रेणी नहीं, बल्कि विशिष्ट स्थल-आधारित वाइन पेश करने और अपीलेशन के अनुमानित मूल्य को बढ़ाने की व्यापक कोशिश का हिस्सा है।

उत्पादकों के पोर्टफोलियो में भी इस श्रेणी का विकास दिखाई देता है। इतालवी वाइन मीडिया में उद्धृत एक उदाहरण Fèlsina की Rancia है, जिसे 2021 विंटेज से Castelnuovo Berardenga भौगोलिक इकाई के तहत Gran Selezione श्रेणी में शामिल किया गया। ऐसे उदाहरण दिखाते हैं कि उत्पादकों ने इस पदनाम का उपयोग स्थापित वाइन को ऊंची श्रेणी में रखने और उन्हें उनके मूल स्थान से अधिक निकटता से जोड़ने के लिए किया है।

कानूनी बदलाव के समर्थकों का कहना है कि इससे उन उत्पादकों को अधिक निश्चितता मिलेगी जिन्होंने Gran Selezione से जुड़े दाखबागों, तहखाने में वाइन बनाने की प्रक्रिया और विपणन में पहले ही निवेश किया है। चूंकि संशोधन Chianti Classico के उत्पादन संबंधी नियमों में बदलाव नहीं करता, इसलिए इसका असर मुख्य रूप से इस बात पर पड़ेगा कि इस शब्द का इस्तेमाल कौन कर सकता है, न कि इस पर कि वाइन कैसे बनाई जानी चाहिए। कई बाज़ारों में भंडार और लेबल का प्रबंधन करने वाली कंपनियों के लिए यह अंतर महत्वपूर्ण है, क्योंकि नियामकीय स्पष्टता पैकेजिंग के फैसलों, वितरकों के साथ संवाद और दीर्घकालीन ब्रांड रणनीति को प्रभावित कर सकती है।

Chianti Classico कंसोर्टियम के अध्यक्ष Giovanni Manetti ने सीनेट की मंज़ूरी को एक महत्वपूर्ण नतीजा बताया और कहा कि उत्पादकों ने इस परियोजना की पहचान और मूल्य की रक्षा के लिए वर्षों तक काम किया है। उनकी टिप्पणी पूरे विवाद के दौरान Chianti Classico के उत्पादकों की मुख्य दलील को दर्शाती है: Gran Selezione अपीलेशन की प्रीमियम पहचान का अहम हिस्सा बन चुका है और इसे अलग नियमों तथा क्षेत्र वाले दूसरे अपीलेशन तक नहीं बढ़ाया जाना चाहिए।

बदलाव प्रकाशित होकर लागू होने पर यह उपाय Chianti Classico को अधिक मज़बूत कानूनी स्थिति में रखेगा। यह इस बात का संकेत भी देता है कि भविष्य में इटली पारंपरिक वाइन उल्लेखों को किस तरह संभाल सकता है—नए विपणन साधन चाहने वाले अपीलेशनों के हितों और उन अपीलेशनों के दावों के बीच संतुलन बनाते हुए, जिनका कहना है कि बाज़ार में किसी शब्द का एक विशिष्ट अर्थ पहले ही स्थापित हो चुका है। वाइनरी, आयातकों और खुदरा विक्रेताओं पर इसका व्यावहारिक असर सबसे सीधे तौर पर लेबल और बिक्री संबंधी भाषा में दिखेगा, जहां इतालवी कानून के तहत Gran Selezione सीमित दायरे की वाइन से जुड़ा रहेगा।